International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 12 No. 6 July – August 2025

आधुनिक परिदृश्य में शिक्षा पद्धति में कावड़ लोक कला का महत्व

प्रिया मौर्य[1], डॉ. लकी टोंक[2]

[1] *संशोधक विद्यार्थी, दयालबाग शैक्षणिक संस्था* ***(Deemed to be University),*** *दयालबाग, आग्रा*

[2] *सहाय्यक प्राध्यापक, दयालबाग शैक्षणिक संस्था* ***(Deemed to be University),*** *दयालबाग, आग्रा*

Corresponding Author - प्रिया मौर्य

DOI - 10.5281/zenodo.17175950

सारांश:

लोक कलाएं मानव सभ्यता के विकास क्रम का जीवंत मूल दस्तावेज रही है। जिसका संबंध सामाजिक संदर्भ को जोड़ना रहा है। इस प्रकार किसी भी देश की लोक कला उसके ***सामाजिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं साहित्य*** *का सार मानी जाती है। जिनमें हमारे लोक प्रिय* ***ग्रंथों रामायण, महाभारत*** *का नाम सर्वोपरि और विशेष रूप में रहा है अर्थात् भारत समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से परिपूर्ण देश रहा हैं। यहाँ पर कहानियाँ सुनना और सुनाना सबसे पसंदीदा परंपराओं में से एक रहा है। भारत में ऐसे कई जनसमुदाय पीढ़ियाँ है, जो भारतीय पौराणिक कथाओं को पढ़ते और सुनते एवं अपने जीवन को उनके अंतर्गत व्यतीत किया* ***करते*** *है। इस प्रकार इन कहानियों को सुनाने के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग माध्यमों का प्रयोग भी किया जाता है। लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा में रहने वाली कला है, राजस्थान की कावड़ लोक कला, कावड़ जो की एक पोर्टेबल लकड़ी का छोटा सा मंदिर है, जिसके पैनलों पर* ***देवी-देवताओं, स्थानीय नायकों-नायिकाओं, संतों और संरक्षकों की दृश्य कथाएं एवं सामाजिक जन-जीवन के दृश्यों*** *को चित्रित किया जाता है। इस प्रकार एक घुमक्कड़ पुजारी कावड़ कला का वर्णन करता है। वह अपनी कावड़ के साथ श्रोताओं के घर जाता है और कहानी सुनाने के साथ-साथ अपनी कावड़ के पैनलो को खोलता है। जैसे-जैसे प्रत्येक पैनल खुलता है, वैसे ही श्रोता की कहानी के प्रति जिज्ञासा बढ़ती जाती है।*

आज के समय में कावड़ का प्रयोग छात्रों को प्रोत्साहित एवं शिक्षित करने के लिए एक अभिनव उपकरण के रूप में भी प्रयोग किया जा रहा है। लोक कला के साथ-साथ कावड़ कला शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। कावड़ कला के माध्यम से सामाजिक परिवेश में विभिन्न नाटकों, कहानियों जैसे- ***बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ के नारे पर आधारित कावड़, शिक्षित कावड़ खरगोश और हाथी जैसे-*** *विषयों से संबंधित कहानियों का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। कावड़ कला में*

धार्मिक कथाओं के साथ ही साथ स्वास्थ और शिक्षा से जुड़ी कहानियों को भी चित्रित किया जाता है अर्थात् यह शोध पत्र आधुनिक परिदृश्य में शिक्षा के क्षेत्र में कावड़ लोक कला की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रस्तुत करेगा।

बीज शब्द: लोक कला, शिक्षा, कावड़ काष्ठ लोक कला, धार्मिक और सांस्कृतिक गाथाएं.

परिचय:

लोक कला और आस्था ने मानव समाज के प्रारम्भिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो आज भी हमारी सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है। शिक्षा नीति 2020 अनुसार लोक कला सांस्कृतिक विरासत को विद्यार्थी जीवन से जोड़ती है। विद्यार्थी में शिक्षा के प्रति रुचि प्रदान करती है। इसी संदर्भ में कावड़ कला जैसी- पारंपरिक धरोहर को भी शिक्षा में शामिल किया जा सकता है। जिससे विद्यार्थी न केवल अपनी संस्कृति को जान सके अपितु उसे सँजोकर भी रख सके। इस प्रकार आज लोक कलाओं ने मानव के लोक जीवन को भी सरल बना दिया है। लोक कला का विकास मानव के विकास क्रम के साथ-साथ ही माना जाता है। सभ्यता व संस्कृति के प्रारम्भिक विकास क्रम में भी लोक कला व आस्थाओं की प्रधानता देखने को मिली है। जिसमें मानव ने सबसे **पहले रेखाओं व रंग के द्वारा भावों** को मूर्त रूप देने के लिए उबड़-खावड़ खुरदरी सतही आँगन का प्रयोग चित्र तल के रूप में किया था। इसके पश्चात ही तो उसने अनेक प्रकार के तलों की खोज कर उनका प्रयोग करना प्रारम्भ किया था जैसे- **कपड़े पर चित्रांकन, पत्थर की नक्काशी, हाथी दांत से बनी कृतियां, मिट्टी से बने बर्तन व लकड़ी की नक्काशी और काष्ठ कला** इत्यादि। भारतीय चित्रकला में इसका आज भी प्रमाण देखने को मिलता है।

लोक कला शब्द का प्रयोग हमें प्राचीन काल से देखने को मिलता है। जैसे- ऋग्वेद में अनेक स्थानों पर इनका प्रयोग साधारण जनता के लिए किया गया था। ऋग्वेद में लोक शब्द के लिए **'जन'** का प्रयोग भी हुआ है।

य इसे रौदसी उभे अहर्मिद्रमतुष्तंव।
विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेद भारतं जनं॥१

ऋग्वेद के सुप्रसिद्ध पुरुषसूक्त में लोक शब्द का व्यवहार का प्रयोग व्यवहार जीवन तथा स्थान दोनों में प्रारंभ किया था।

नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शिष्णो द्यो: संवर्त्त।
पद्भ्यां भूमिदृश: श्रोत्राताथ लोकां अकल्पयन॥२

उपनिषदों में अनेक स्थानों में पर लोक शब्द प्रदर्शित किया गया है। अर्थात लोक शब्द एक ऐसा शब्द है, जो साधारण जन समूह के लोगों द्वारा प्रयोग किया जाता था। लोक शब्द से ही लोक कला का उद्भव माना जाता है। लोक कला जो साधारण गाँव में रहने वाले लोगों के द्वारा कि जाती है। लोक शब्द का अर्थ अंग्रेजी में **'फोक'** कहा जाता है। जिसका अर्थ प्रकृति के निकट व यौगिक तथा विशेषण दोनों रूपों में विशिष्ट लोक संस्कृति अथवा समाज का एक चिर-परिचित शब्द है। लोक शब्द का प्रयोग व उच्चारण मात्र से ही मनुष्य के जनजीवन का चित्रण उसकी संस्कृति की झांकी हमारी आंखों के सामने उपस्थित हो जाती है। लोक कला शब्द का अर्थ बहुत व्यापक है।

एक ओर तो यह शब्द अपने में विश्व अथवा समाज को समेट लेता है। वही दूसरी ओर वह जनसामान्य के अर्थ का भी सूचक है। एक प्रकार से कहा जाए तो लोक कला एक पारंपरिक कला है। जो भारत वर्ष में निवास करने वाले अनेक जन जातियों में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी चली आ रही है। यह महज

एक परंपरा ही नहीं अपितु जन समाज विशेष की आज पहचान भी बन गई है। इस कला में समाज विशेष की संस्कृति परंपरा एवं रीति-रिवाजों की जानकारी मिलती है। लोक कलाकार स्थानीय **पर्व-त्यौहार, देवी-देवताओं, विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन एवं तात्कालिक सामाजिक स्थिति** को लोक कला के माध्यम से उजागर किया गया है। लोक कला अपने प्रारम्भिक जीवन से ही मानव समुदाय को आनंद देने वाली कला रही है। जिसका संदेह नहीं किया जा सकता है। इसमें गहरे मानवीय मूल्यों का अंकन देखने को मिला है। आज आधुनिक युग में यह परिवर्तन और प्रगति की कला बन गई है। लोक कला वर्तमान समय में गांवों तक ही सीमित नहीं रही है। अपितु यह **शहरों के छोटे-बड़े घरों, विद्यालयों, सरकारी एवं गैर सरकारी भवनों की दीवारों निजी संस्थानों** आदि व्यवसायी व्यक्तियों तक पहुँच कर अपनी एक अनूठी नई पहचान विकसित की है। जिसका श्रेय आज हमारे आधुनिक लोक कलाकारों को जाता है। आज इन्हीं लोक कलाकारों की गहण अभ्यास व अध्ययन की सहायता से लोक कलाओं का भी शिक्षा में प्रयोग देखने को मिल रहा है। इन कलाकारों ने आज भी लोक कला को जीवित रखा है।

अतः मूल रूप से देखा जाए तो शिक्षा का अर्थ है ज्ञान, कौशल और मूल्यों का विकास करना है। जबकि कला मानव अभिव्यक्ति का एक रूप है, जो विचारों, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए विभिन्न माध्यमों का उपयोग करती है, जिसमें हमारे लोक कलाएं अपना एक महत्व पूर्ण योगदान दे रही है। लोक कला में सौन्दर्य और रचनात्मकता होती है, जो हमें दुनिया को अलग नजरिए से देखने में मदद करती है, लोक कला जो प्राय: सामुदायिक परंपराओं में निहित होती है, जिसमें बालक के ऊपर औपचारिक कलात्मक प्रशिक्षण का अभाव होता है, सांस्कृतिक समझ, रचनात्मकता ज्ञान और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देकर शिक्षा में एक मूल्यवान उपकरण बनती है। परिभाषित रूप में कहाँ जाए तो-लोक कला उन लोगों द्वारा बनाई गई कला है, जिन्हें औपचारिक प्रशिक्षण नहीं मिला है, जो अक्सर एक विशिष्ट समुदाय की परंपराओं और मूल्यों को प्रतिबिंबित करती है। इन्हीं लोक कलाओं का जन्म मानस विशेषकर: ग्रामीण जनों की सामूहिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति द्वारा हुआ है। जो आज एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जीवित है। जिनमें से एक हमारी कावड़ लोक कला है। जो भारत के राजस्थान राज्य में भी देखने को मिलती है। जो मेवाड़ व चित्तौड़गढ़ के बस्सी गाँव में होने वाली कलाओं में से एक है। इसमें छोटे-छोटे कपाटों को चित्रित कर उन्हें इस प्रकार से सृजित किया जाता है जो देखने में मंदिर रूपी प्रतीत होते है। एक प्रकार से कहा जाए तो यह एक छोटा सा मंदिर रूपी कावड़ है। जिसका निर्माण काष्ठ से किया जाता है, इस कला में कलाकार लकड़ी को तराश कर विभिन्न प्रकार के कलाकारी वस्तुएं बनाते है। राजस्थान को अपनी रंग-बिरंगी विरासत के लिए जाना जाता है। यहाँ कई सुंदर कलाएं एवं काष्ठ कलाओं का जन्म हुआ है।

राजस्थान की काष्ठ लोक कला आयामों में **कठपुतलि, ईश्वर, गणगौर, तोरण, बाजोट, माणकथंभ, चौपड़, कावड़, खांड़े, मुखौटे, लोक प्रतिमा, बेवाण, झूले, गडुले , तथा पावड आदि है,** जिनका महत्व

केवल सामाजिक, धार्मिक ही नहीं अपितु पौराणिक, ऐतिहासिक दृष्टि एवं शैक्षिक दृष्टि के रूप में भी देखा जा रहा है।

इन्हीं में से एक कावड़ चित्र कला भी रही है। इस प्रकार काष्ठ लोक कलाओं का जनक प्रभात जी सुधार को माना जाता है। प्रभात जी ने 350 साल पहले लकड़ी की गणगौर बनाई थी। इस कला के उपयोग से **बेवाण, कावड़** और लकड़ी के खिलौने भी बनाए जाते है। राजस्थान की काष्ठ कला में कावड़ लोक कला कई दृष्टियों पर आधारित रही है। कावड़ कला लकड़ी का यह छोटा सा मंदिर जो धार्मिकता, आस्था-स्वरूपों का सुमेरु है कावड़ चित्रकला कला का जीता जागता उदाहरण लोक-कीर्तिस्तूप है। विविध कपाटों में खुलने बंद होने वाले यह मंदिर को देवालय के नाम से भी जाना जाता है। कावड़ हिन्दी शब्द किवाड़ से बना है। जिसका अर्थ होता है, लकड़ी का दरवाजा कुछ लोग इसे लकड़ी का चलता-फिरता मंदिर भी कहते है। कावड़ कला जो कि, एक श्रव्य व दृश्य कला है। जिसका उदाहरण हमें भरत मुनि के द्वारा लिखी गई नाट्यशास्त्र के ग्यारह वे श्लोक में भी देखने को मिला है।

क्रीड़नीयक दृश्यं श्रव्यं च यद् भवेत् ॥11॥

न वेद व्यवहारोडयं संश्राव्य: शुद्रजातिषु ।

अतत्: इस का अर्थ यह है कि, पितामाह (भीष्म) ने कहा कि महेंद्र और प्रमुख देवताओं की कृपा से हम उन चीजों को समझना चाहते हैं- जो खेलने योग्य व देखने योग्य और सुनने योग्य हों। कावड़ कला प्रारंभ में एक ही कपाट की थी, जो पटड़ी कहलाती थी। कावड़ के समानांतर ही है, लेकिन राजस्थान व गुजरात को छोड़कर बाकी स्थानों पर इसे पटड़ी चित्रण के नाम से पुकारा जाता है। परंतु गुजरात में इसे लेकर घूमने की परंपरा नहीं थी। कावड़ का निर्माण राजस्थान के बस्सी गाँव में सुथार समुदाय व खेराती जाति के लोगों द्वारा की जाने वाली कला रही है। सुथार जाति के लोग बढ़ई और चित्रकार होते है, जो काष्ठ के सुंदर मंदिर का निर्माण करते है। इस काष्ठ कला में आमतौर पर सस्ती **लकड़ी अरड़, धाक, धाके, सामवान, खिरनी, आम अड़सा** आदि का उपयोग कर कावड़ का निर्माण किया जाता है। कावड़ लगभग एक से तीन फुट तक ऊंचे होते है। जिसके 10-16 पैनल होते है, जिन पर कई कहानी कही जाती है। कावड़ का बुनियादी ढ़ाचा आम शीशम या फिर साल वृक्ष से बनाया जाता है। कभी-कभी मीठे नीम के वृक्ष का भी प्रयोग किया जाता है। कावड़ कला महज एक परंपरा ही नहीं अपितु समाज विशेष की पहचान भी बन गई है। इस प्रकार आज कावड़ चित्र कला अपनी चित्र कला का प्रचार प्रसार करने में ही नहीं अपितु शिक्षा को अपना लक्ष्य बनाते हुए मनुष्य को ज्ञानवान बनाने का प्रयास कर रही है। जिसमें उसके सामाजिक कर्तव्यों के प्रति उत्तरदायी बनाना है। जिसका उदाहरण- कावड़ ने सूचना का अधिकार में दिया है। सूचना का अधिकार जिसमें गाँव के अशिक्षित लोगों को कावड़ के माध्यम से हमारे मौलिक कर्तव्यों के विषय में जागरूक किया गया है।

कावड़ कला में सुचना का अधिकार आन्दोलन विषय चित्र संख्या ०१ में लोगों को जानकारी देते हुए दिखाया गया है। जो आंदोलन गाँधी वादी विचारों पर आधारित है। जिसमें कावड़ के चित्रों के द्वारा स्वैच्छिक भूमि सुधार आंदोलन के विषय जागरूक किया गया है।

कावड़ कलाकार ने इस आंदोलन के जरिए अमीर और गरीबों के बीच सामाजिक और आर्थिक असमानताओं कर प्रति लोगों के बीच इस भावना को कम करने का प्रयास किया गया है। एक प्रकार से कावड कलाकार का लक्ष्य शिक्षा को लोक कला के माध्यम से एक बालकों शिक्षित करना है। पारंपरिक रूप से पहले कावड़ लोक कला में रामायण, महाभारत जैसे- धार्मिक ग्रंथों व राम, विष्णु, कृष्ण, पाबुजी, भोमिया जी और तेजाजी जैसे स्थानीय देवी-देवताओं की कथा का चित्रण करते थे, लेकिन आज वे समकालीन जन-जीवन के विषयों का चित्रण करते हैं।

इन दिनों कावड़ पर सामाजिक विषयों एवं किसी संदेश या शैक्षिक मूल्यों के साथ बच्चों के लिए कहानियों का चित्रण होता है। चित्रकार द्वारका प्रसाद ने पंचायती राज व्यवस्था की कावड़ जिसका विषय विनोबा भावे बुद्ध आन्दोलन चित्र संख्या ०२ है। यह चित्रण राजीव गांधी के प्रभावी नेता की छवि को दर्शाता है, जिन्होंने देश में महत्वपूर्ण बदलाव और विकास लाने का कार्य किया था। जब श्री राजीव गांधी देश के प्रधानमंत्री थे, तब उन्होंने पंचायती राज व्यवस्था पर विचार किया गया था। इसका असर देश की महिलाओं पर भी पड़ा, क्योंकि इससे उन्हें शासन में भागीदारी करने का मौका मिला। महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा हुआ और उन्होंने भेदभाव के खिलाफ लड़ने के लिए खुद पहल की। इस पहल के माध्यम से महिलाओं को अपने फैसले लेने के लिए एक मंच मिला।

सवेरा या सुबह की एक कावड़ चित्र संख्या - ०३ कावड़ चित्रकारों ने देश के प्रति आए बदलावों पर भी आधारित कावड़ चित्रण कार्य किया है। जिसमें उन्होंने बाल पुस्तक कहानी व कविताओं का भी चित्रण कार्य किया है, जैसे सवेरा या सुबह की यह कावड़ चित्र बनाया है। इस कावड़ में रेन-रेन गो अवे, ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार, हम्प्टी डम्प्टी, मैरी हैड ए लिटिल लैम्ब, टेडी बियर जैसी क्लासिक बचपन की कविताएं दिखाई गई है। कविताएँ बच्चों के बचपन का एक अहम हिस्सा होती हैं और यह उन्हें

भाषा के प्रति कान एवं कंठ विकसित करने में मदद करती हैं। जिससे बालक का सम्पूर्ण विकास हो। इन क्रियाकलापों से बालक प्रत्येक कार्य में पूर्णतः दक्ष हों जाता है व अभिव्यक्ति की विभिन्न पद्धतियों को सुन्दरतम् रूप प्रदान करने मैं महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ऐसा माना जाता है, कि बालक का मानसिक विकास 5 वर्ष की आयु तक हो जाता है, इस में बालक प्रत्येक चीजों को सुनकर देखकर समझ कर ज्ञानार्जन करता है।

जिस प्रकार कावड़ लोक चित्र कला दृश्यों व कहानियों को सुनाने का कार्य करती है। उसी प्रकार यह सत्य है, की बालक देखकर सुनकर किसी भी चीज को समझता है, किन्तु यदि चित्र के माध्यम से किसी वस्तु को देखता है, तो वह अधिक समय तक उसके ज्ञान कोष में बस जाती है। हाथी की कहानी चित्र संख्या ०४ के द्वारा बालकों को ज्ञान देने का प्रयास किया जा रहा है।

बन्दर की कहानी चित्र संख्या ०५ में कावड़ कला के माध्यम से बंदर की कहानी को अत्यंत रोमांचित ढंग से प्राकृतिक दृश्य के साथ चित्रित की गई है। कावड़ लोक कला आज सांस्कृतिक ज्ञान को बढ़ावा दे रही है। जिससे कावड़ कलाकारों ने शिक्षा को लेकर किए गए कार्य को एक महत्व पूर्ण स्थान मिला है।

चित्र संख्या ०५ में नन्हे शिशुओं के लिए अँग्रेजी वर्णमाला को अत्यंत प्रभावी ढंग से विभिन्न चित्रकृति कर बनाया गया है। जिससे शिशु व बालकों में सीखने की रुचि का विकास हो। चित्रों के माध्यम से बालक के ज्ञान व मस्तिक में स्मरण शक्ति का विकास किया। कावड़ लोक कला एक प्रकार से श्रव्य-दृश्य है। जिसमें बालक देख कर व सुनकर चीजों को याद कर सकता है।

सफाई से सम्बंधित विषयों को लेकर चित्र संख्या ०६ में सफ़ाई या स्वच्छता की यह कावड़

चित्रित की गई है। यह कावड़ चित्र भावी पीढ़ियों को लाभ देने के लिए एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण बनाए रखने को प्रोत्साहित करती है। हवा, पानी, मिट्टी और भोजन की गुणवत्ता हमारे स्वास्थ्य और हमारे जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। जो एक ताजा और स्वस्थ वातावरण मनुष्य के तनाव को कम करता है। और इसके कई स्वास्थ्य लाभ है।

मीना की कहानी चित्र संख्या ०७ पर आधारित कावड़ लोक कला पेंटिंग गांव की एक युवा लड़की मीना की कहानी को दर्शाती है जो स्कूल जाने और एक स्वतंत्र महिला बनने के लिए उत्सुक है। समाज की चुनौतियों और अपनी स्थिति के बावजूद मीना स्कूल जाती है और उच्च शिक्षा के लिए लंदन जाती है। भारत लौटने के बाद वह अपने गांव की अन्य लड़कियों को शिक्षित करती है और शिक्षा के महत्व को फैलाती है। इसके बाद उसकी शादी हो जाती है और वह एक खुशहाल जीवन जीती है। एक और प्रमुख कावड़ जो बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के विषय पर आधारित बनाई गई हैं, जिसमें बेटियों को शिक्षित करने की विचारधारा पर प्रकाश डाला गया है, अर्थात आज विश्व के प्रत्येक देशों में महिलाओं की शैक्षणिक, सामाजिक व आर्थिक स्थिति देखी गई है। जिसमें महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा में कम प्राथमिकता दी जाती है। आज भी कहीं न कहीं बेटियों की शिक्षा पर रोक लगा दी जाती है। पर कई स्थानों व घरों में कन्या के जन्म को एक उत्सव के रूप में भी बनाया जाता है। इस प्रकार आज कावड़ लोक कला के माध्यम से जो लोग अशिक्षित है वह चित्र व प्रदर्शन कला के माध्यम से सूचना प्राप्त कर रहे है।

आज लोगों को प्रशिक्षण देकर और जागरूक बनाकर तथा सामुदायिक एकजुटता के माध्यम से उनकी सोच को बदलने कावड़ लोक कलाकारों ने अपना एक महत्व पूर्ण योगदान दिया है। कावड़ लोक कला के माध्यम से बालकों में रचनात्मकता का भी विकास किया जा रहा है। जिससे वह बालक वस्तुओं को देखकर कल्पना शीलता हो रहे है। व प्रकृति रंगों का प्रयोग करना लोक चित्रकला कार्य करने का प्रयास भी किया जा रहा है। कावड़ कला के माध्यम से विद्यार्थी समाज के विभिन्न पहलुओं के विषय में भी जानकारी ले रहे है। जैसे- लोक जीवन परंपरा सांस्कृतिक, रीति-रिवाज व लोक कला कार्य आदि। इस प्रकार आज राजस्थान की लोक चित्रण शैलियों ने व्यवसायीकरण के क्षेत्र में भी अपनी एक नई पहचान बनाई है। जिसमें कावड़ लोक कला ने आर्थिक विकास से आज अपनी ग्रामीण लोक चित्रण शैली को एक व्यवसाय के रूप से जोड़कर देश-विदेशों में अपनी प्रतिष्ठा बनाई है। कावड़ कला में धार्मिक कथाओं के साथ ही साथ स्वास्थ और शिक्षा से जुड़ी कहानियों भी बताई जाती है अर्थात् यह शोध पत्र आधुनिक परिदृश्य में शिक्षा के क्षेत्र में कावड़ लोक कला की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रस्तुत करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची / Bibliography:

1. कुमार व्यास, राजेश, (2018) - भारतीय कला, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी,
2. ग्रीस, अग्रवाल - कला समीक्षा
3. चतुर्वेदी, मंजुला, (2009) - भारतीय लोक कला के अभिप्राय, कला प्रकाशन
4. भानावत, महेंद्र, (1975) - कावड़, प्रकाशन भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर, संस्करण प्रथम, प्रकाशन
5. प्रताप, रीता, (2012) - भारत की लोक कला. 8, 85,183,186,188,
6. शाडिल्य, महेशचंद्र - (1996) काष्ठ कला।
7. सक्सेना आंशवना, सरित सुशील, (2016) - शिक्षा में नाटक, कला एवं सौन्दर्य शास्त्र, राखी प्रकाशन प्रा. लि. 9 46, 48,67
8. भानावत, महेंद्र, (1974) - लोक कला मूल्य एवं संदर्भ, भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर
9. Sabnani, Nina, (2014) - Kaavad Tradition of Rajasthan, Publisher Niti Yogi Books
10. Kumar Ray Sudhanshu, (1967) - Folk Art of India Published by Shree Shrischandra Chitrkar on behalf of the Yogalaya, 8, 116

Internet Website:

1. https://www.rajasthanstudy.co.in/2011/06/**blog-**
2. **https://hindi.livehistoryindia.com/story/living-history/kavad-**
3. **https://digitalmuseum.rajasthan.gov.in/**
4. **https://shop.gaatha.com/buy-indian-crafts/kaavad**
5. **https://www.directcreate.com/shop/536/satya-narayansuthar**
6. **https://www.directcreate.com/product/10513/ramayan-kavad**
7. **https://gaatha.org/Craft-of-India/traditional-story-telling-kavad/**

चित्र फलक सूची:

1. सूचना का अधिकार आंदोलन, **माध्यम** लकड़ी पर प्राकृतिक रंग, **आकार** लंबाई 16 चौड़ाई 7.5, 10 पट
2. बंदर की कहानी, **माध्यम** लकड़ी पर प्राकृतिक रंग, **आकार** लंबाई 16 चौड़ाई 7.5, पट 10
3. सवेरा या सुबह, **माध्यम** लकड़ी पर प्राकृतिक रंग, **आकार** लंबाई 12 चौड़ाई 4.5, पट 10
4. गजपति कुलपति की कहानी, **माध्यम** लकड़ी पर प्राकृतिक रंग, **आकार** लंबाई 16 चौड़ाई पट 7.5 10
5. स्कूल, **माध्यम** लकड़ी पर प्राकृतिक रंग, **आकार** लंबाई 16 चौड़ाई 7.5, 8 पट 6 लंबाई 6
6. मीना की कहानी, एक लड़की पड़ेगी तो सात पीढ़ी का सुधार होगा, **माध्यम** लकड़ी पर प्राकृतिक रंग**, आकर** लंबाई 16 चौड़ाई 7.5 पट 5